وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَ كَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى

और अगर हम उन की तरफ फरिश्ते उतारते और उन से मुर्दे कलाम करते

وَ حَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا

और हम उन पर हर चीज़ को इकट्ठा कर देते आमने सामने तब भी वो ईमान न लाते

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾

मगर ये के अल्लाह चाहे। लेकिन उन में से अक्सर जहालत की बातें करते हैं।

وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और जिन्नात में से शयातीन को दुशमन बनाया है,

وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ

उन में से एक दूसरे को मुज़य्यन बात की धोका देने के लिए खबर देते

غُرُوْرًا ط وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾

हैं। और अगर तेरा रब चाहता तो वो ऐसा न करते, इस लिए आप उन को छोड़ दीजिए और उस चीज़ को जिस को वो खुद घड़ रहे हैं।

وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

और इस लिए ताके उस की तरफ माइल हो जाएं उन लोगों के दिल जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ اَفَغَيْرَ

और इस लिए ताके वो उस को पसन्द करें, और ताके वो करते रहें वो बुरे काम जो वो कर रहे हैं। क्या फिर

اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ

अल्लाह के अलावा को मैं हकम के तौर पर तलाश करूं हालांके उसी ने तुम्हारी तरफ

الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ط وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ

किताब तफसील से उतारी है। और वो लोग जिन को हम ने किताब दी

يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ

वो जानते हैं के ये तुम्हारे रब की तरफ से हक़ के साथ नाज़िल की गई है, इस लिए आप शक

مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا

करने वालों में से न हों। और आप के रब के कलिमात सच्चाई और इन्साफ में ताम्म

وَّعَدْلًا ط لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ج وَهُوَ السَّمِيْعُ

हैं। उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं। और वो सुनने वाला,

الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ

इल्म वाला है। और अगर आप उन में से अक्सर का केहना मान लोगे जो ज़मीन में हैं

يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ

तो वो आप को अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर देंगे। वो तो सिर्फ गुमान के पीछे चलते हैं

وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ

और वो सिर्फ अटकल से बातें करते हैं। यक़ीनन आप का रब वो खूब जानता है उस शख्स को

يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾

जो अल्लाह के रास्ते से भटक गया। और वो हिदायतयाफ्ता लोगों को भी खूब जानता है।

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ

फिर तुम खाओ उस में से जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो अगर तुम अल्लाह की आयतों पर

مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ

ईमान रखते हो। और तुम्हें क्या हुवा के तुम न खाओ उस में से जिस पर अल्लाह का नाम

اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ

लिया गया हो, हालांके उस ने तुम्हारे लिए तफसील से बयान कर दिया है उस को जो उस ने तुम पर हराम किया है

اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ

मगर वो जिस की तरफ तुम मजबूर हो जाओ। और यक़ीनन बहोत से लोग अपनी ख्वाहिशात के ज़रिए बग़ैर इल्म के गुमराह

بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾

करते हैं। यक़ीनन आप का रब वो हद से तजावुज़ करने वालों को खूब जानता है।

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ

और ज़ाहिरी गुनाह और बातिनी गुनाह छोड़ दो। यक़ीनन वो लोग जो गुनाह कमाते

الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَاْكُلُوْا

हैं, अनक़रीब उन्हें उन के करतूत की सज़ा दी जाएगी। और तुम मत खाओ

مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ

उस में से जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो और यक़ीनन ये नाफरमानी है।

وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰۤى اَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ

और यक़ीनन शयातीन अपने दोस्तों की तरफ वही करते हैं ताके वो तुम से झगड़ें। और अगर

اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ ع اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا

तुम उन का केहना मान लोगे तो यक़ीनन तुम भी मुशरिक हो जाओगे। क्या वो शख़्स जो मुर्दा था

فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ

फिर हम ने उसे ज़िन्दा किया और हम ने उस के लिए नूर बनाया जिस को ले कर वो इन्सानों में चलता है,

كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِي الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ

उस के मानिन्द हो सकता है जिस का हाल तारीकियों में है, जिस से वो निकलने वाला नहीं है।

كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَكَذٰلِكَ

इसी तरह काफिरों के लिए मुज़य्यन किए गए वो अमल जो वो करते हैं। और इसी तरह

جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ

हम ने हर बस्ती में वहां के बड़े मुजरिमों को बनाया ताके वो उस में मक्कारी करें।

وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

और वो मक्कारी नहीं करते मगर अपनी ही जान के साथ और उन्हें पता नहीं।

وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ

और जब उन के पास कोई मोअजिज़ा आता है तो वो केहते हैं के हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे जब तक के हमें उस के जैसा

مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔۘ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ

(मोअजिज़ा) न दिया जाए जो अल्लाह के दूसरे पैग़म्बरों को दिया गया। अल्लाह खूब जानता है उस जगह को जहां वो अपने पैग़ाम को रखता है।

سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَ عَذَابٌ

अनक़रीब मुजरिमों को ज़िल्लत पहोंचेगी अल्लाह के पास और सख्त अज़ाब

شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ

पहोंचेगा इस वजह से के वो मक्कारी करते हैं। फिर वो शख़्स जिस को हिदायत देने का अल्लाह

اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ

इरादा करे तो अल्लाह उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देते हैं। और जिस के गुमराह करने का अल्लाह इरादा

اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ

करते हैं उस का सीना तंग कर देते हैं, बहोत ज़्यादा तंग, गोया के वो आसमान में

فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

चढ़ रहा है। इसी तरह अल्लाह गन्दगी डालते हैं उन लोगों पर

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَ هٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ

जो ईमान नहीं लाते। और ये तेरे रब का रास्ता सीधा है। यक़ीनन

فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ

हम ने आयात को तफसील से बयान किया ऐसी क़ौम के लिए जो नसीहत हासिल करती है। उन के लिए दारूस्सलाम है

عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ

उन के रब के पास और वो उन का कारसाज़ है उन आमाल की वजह से जो वो कर रहे हैं। और जिस दिन

يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ

अल्लाह उन तमाम को इकट्ठा करेगा, (तो कहेगा के) ऐ जिन्नात की जमाअत! तुम बहोत ज़्यादा

مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا

इन्सानों को तलब कर चुके। और उन के दोस्त इन्सानों में से कहेंगे ऐ हमारे रब!

اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّ بَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ

हम में से एक ने दूसरे से फाइदा उठाया और हम पहोंच गए हमारी मुक़र्रर की हुई आखिरी मुद्दत तक

اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ

जो तू ने हमारे लिए मुक़र्रर की थी। अल्लाह फरमाएंगे के दोज़ख तुम्हारा ठिकाना है, उस में हमेशा रहोगे,

اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذٰلِكَ

मगर जितना अल्लाह चाहे। यक़ीनन तेरा रब हिक्मत वाला, इल्म वाला है। और इसी तरह

نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع ١٥ ٢

हम ज़ालिमों में से एक को दूसरे पर मुसल्लत करते हैं उन आमाल की वजह से जो वो करते हैं।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

ऐ जिन्नात और इन्सानों की जमाअत! क्या तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर नहीं आए

يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

जो तुम पर मेरी आयतें तिलावत करते और जो तुम्हें तुम्हारे इस दिन के मिलने से

هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ

डराते थे? तो उन्हों ने कहा के हम ने हमारी जानों के खिलाफ गवाही दी और उन को दुन्यवी ज़िन्दगी ने

الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

धोके में डाले रखा और उन्हों ने अपनी जानों के खिलाफ गवाही दी के वो

كٰفِرِيْنَ ۝١٣٠ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى
काफिर थे। ये इस वजह से के तेरा रब बस्तियों को हलाक नहीं करता
بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ۝١٣١ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ
जुल्म से इस हाल में के वहां वाले गाफिल हों। और हर एक के लिए उन के आमाल के मुताबिक़
مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝١٣٢ وَرَبُّكَ
दरजात हैं। और तेरा रब बेखबर नहीं है उन कामों से जो वो कर रहे हैं। और तेरा रब
الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ
बेनियाज़ है, रहमत वाला है। अगर वो चाहे तो तुम्हें हलाक कर दे और तुम्हारे
مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ
बाद जानशीन बनाए जिसे चाहे जैसा के तुम्हें दूसरी क़ौम की ज़ुर्रीयत में
قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝١٣٣ؕ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ
से पैदा किया। यक़ीनन जिस का तुम से वादा किया जा रहा है वो ज़रूर आने वाला है। और तुम भाग कर
بِمُعْجِزِيْنَ ۝١٣٤ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ
अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते। आप फरमा दीजिए ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह पर रेह कर अमल करते रहो,
اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ
यक़ीनन मैं भी अमल कर रहा हूँ। अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के किस के लिए आखिरत का
الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝١٣٥ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ
घर है। यक़ीनन ज़ालिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और उन्हों ने अल्लाह के लिए हिस्सा
مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا
मुक़र्रर किया उस खेती में से और चौपाओं में से जिस को अल्लाह ने पैदा किया, फिर उन्हों ने अपने ज़अम के
لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ
मुताबिक़ कहा के ये अल्लाह का हिस्सा है और ये हमारे शुरका का हिस्सा है। फिर जो उन के शुरका का हिस्सा है
فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ
वो अल्लाह को नहीं पहोंचता। और जो अल्लाह का हिस्सा है वो उन के शुरका को
اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝١٣٦ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ
पहोंच जाता है। बुरे हैं वो फैसले जो वो कर रहे हैं। और इसी तरह मुशरिकीन में से

مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ

बहोत सों के लिए उन के शुरका ने उन की औलाद का क़त्ल मुज़य्यन किया ताके वो उन्हें हलाक कर दें

وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ

और ताके उन पर उन के दीन को मुल्तबिस कर दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वो ऐसा न करते,

فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾ وَقَالُوْا هٰذِهٖۤ اَنْعَامٌ

इस लिए आप छोड़ दीजिए उन को और उन चीज़ों को जिस को वो झूठ गढ़ रहे हैं। और उन्हों ने कहा के ये चौपाए हैं

وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَاۤ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ

और ये खेतियाँ हैं जो ममनूअ हैं। इस को नहीं खा सकता मगर वही जो हम चाहें उन के ज़अम के मुताबिक़ और ये

وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَ اَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ

चौपाए हैं के जिन की पुश्त (उन की सवारी) हराम है और ये चौपाए जिन पर वो लोग

اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ

अल्लाह का नाम नहीं लेते, उस पर झूठ गढ़ते हुए। अनक़रीब अल्लाह उन को सज़ा देगा

بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَ قَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ

उन के झूठ गढ़ने की। और उन्हों ने कहा के जो इन चौपाओं के पेटों

الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَ مُحَرَّمٌ عَلٰۤى اَزْوَاجِنَا ۚ

में है वो खालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी बीवियों पर हराम है।

وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ

और अगर वो (जनीन) मुर्दा हो तो वो सब उस में शरीक होंगे। अनक़रीब अल्लाह उन को उन के

وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ

बयान की सज़ा देगा। यक़ीनन वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है। यक़ीनन नुक़सान उठाया उन लोगों ने

قَتَلُوْۤا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا

जिन्हों ने अपनी औलाद को क़त्ल किया हिमाक़त से इल्म न होने की वजह से और उन्हों ने हराम की

مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا

वो चीज़ें जो अल्लाह ने उन को रोज़ी के तौर पर दी अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए। यक़ीनन वो गुमराह हो गए और

مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ ع

उन्हों ने हिदायत नहीं पाई। और वही अल्लाह है जिस ने बेलों वाले और जिस ने बेलों के अलावा के (तने वाले दरख़्तों के)

وَّ غَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ
बाग़ात बनाए, और उस ने खजूर और खेती को बनाया जिन के फल मुख्तलिफ होते हैं (मज़े और शक्ल में)।
وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ
और जिस ने ज़ैतून और अनार को बनाया के कुछ उन में से एक दूसरे के मुशाबेह हैं और कुछ एक दूसरे के मुशाबेह नहीं
كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ٘
हैं। तो तुम उस के फल में से खाओ जब वो फल लाए और तुम उस का उस की खेती काटने के दिन हक़ अदा करो।
وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝١٤١
और तुम इसराफ मत करो। यक़ीनन अल्लाह इसराफ करने वालों से महब्बत नहीं करते।
وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ
और उस ने चौपाओं में से कुछ जानवर बनाए बोझ उठाने वाले और कुछ छोटे चौपाए बनाए। तो तुम खाओ उस में
وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٤٢
से जो अल्लाह ने तुम को रोज़ी के तौर पर दिए और तुम शैतान के क़दम बक़दम मत चलो। यक़ीनन वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।
ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ
उस ने आठ क़िस्में पैदा कीं। भेड़ों में से दो दो और बकरियों में से
اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ
दो दो। आप फरमा दीजिए के क्या दोनों मुज़क्कर उस ने हराम किए या दोनों मादाएं
اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ
या जिस को दोनों मादाओं की बच्चेदानियाँ महफूज़ किए हुए हैं? तुम मुझे खबर दो दलील से
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝١٤٣ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ
अगर तुम सच्चे हो। और उस ने ऊँट में से पैदा किए दो दो
وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ
और गाए में से दो दो। आप फरमा दीजिए के क्या दोनों नर हराम किए या दोनों मादाएं हराम कीं
اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ
या उस को जिस को दोनों मादाओं की बच्चेदानी महफूज़ किए हुए हैं? क्या तुम
شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ
मौजूद थे जब तुम्हें अल्लाह ने इस का हुक्म दिया? फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ

अल्लाह पर झूठ गढ़े ताके वो इन्सानों को बग़ैर तहक़ीक़ के गुमराह करे?

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٤﴾ قُلْ لَّاۤ اَجِدُ ع ١٧ ٢

यक़ीनन अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देते। आप फरमा दीजिए के मैं तो नहीं पाता

فِىْ مَاۤ اُوْحِىَ اِلَىَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ

उस में जो मेरी तरफ वही किया जा रहा है कोई हराम चीज़ किसी खाने वाले पर जिस को वो खाए सिवाए

اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ

इस के वो मुर्दार हो या बेहता हुवा खून हो या खिन्ज़ीर का गोश्त हो, फिर वो यक़ीनन

رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ

सरापा गन्दगी है, या नाफरमानी का ज़रिया हो के उस पर ग़ैरूल्लाह का नाम लिया गया हो। फिर जो मजबूर हो जाए इस हाल में के वो लज़्ज़त को तलाश

بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ

करने वाला न हो और जान बचाने की मिक़्दार से तजावुज़ करने वाला न हो तो यक़ीनन तेरा परवरदिगार बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और

هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ

यहूदियों पर हम ने हर नाखुन वाले जानवर को हराम किया था। और गाए और बकरी में से हम ने उन पर हराम किया था

حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَاۤ

उन की चरबियों को मगर वो चरबी जिस को उन की पीठ उठाए हुए हो

اَوِ الْحَوَايَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ

या आंतें जिस को उठाए हुए हो या जो हड्डियों के साथ मिली हुई हो। ये हम ने उन को उन की सरकशी की वजह से सज़ा दी।

وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿١٤٦﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ

और यक़ीनन हम सच्चे हैं। फिर अगर वो आप को झुठलाएं तो आप फरमा दीजिए तुम्हारा रब वसीअ

رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ

रहमत वाला है। और उस का अज़ाब मुजरिम क़ौम से लौटाया नहीं

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٤٧﴾ سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ

जाएगा। अनक़रीब मुशरिक लोग कहेंगे के अगर अल्लाह

اللّٰهُ مَاۤ اَشْرَكْنَا وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَىْءٍ ؕ

चाहता तो न हम और न हमारे बाप दादा शिर्क करते और न हम कोई चीज़ हराम करते।

كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا

इसी तरह झुठलाया उन लोगों ने जो उन से पेहले थे यहां तक के उन्हों ने हमारा अज़ाब

بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ

चखा। आप फरमा दीजिए तुम्हारे पास क्या दलील है, तो तुम उसे हमारे सामने निकालो।

اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿١٤٨﴾

तुम तो सिर्फ गुमान के पीछे चलते हो और तुम तो सिर्फ अटकल से बातें करते हो।

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ

आप फरमा दीजिए फिर अल्लाह ही के लिए (दिल तक) पहोंचने वाली हुज्जत है। फिर अगर अल्लाह चाहता तो तुम तमाम को हिदायत

اَجْمَعِيْنَ ﴿١٤٩﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ

दे देता। आप फरमा दीजिए के तुम अपने गवाहों को लाओ जो गवाही दें

اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ

इस की के अल्लाह ने उस को हराम किया है। फिर अगर वो गवाही दें तो आप उन के साथ गवाही न दीजिए।

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ

और उन की ख्वाहिशात के पीछे न चलिए जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और जो

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٠﴾ قُلْ ع ١٨ ٥

आखिरत पर ईमान नहीं रखते और जो अपने रब के साथ दूसरे शुरका को बराबर क़रार देते हैं। आप फरमा दीजिए

تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ

के तुम आओ, मैं तिलावत करता हूँ वो जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम किया है, ये है के उस के साथ किसी भी

شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ

चीज़ को शरीक मत ठेहराओ और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करो। और अपनी औलाद को फक़्र की वजह से

مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا

क़त्ल मत करो। हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और बेहयाई की चीज़ों

الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا

के क़रीब मत जाओ, उन के जो उस में से ज़ाहिर हैं और जो छुपी हुई हैं। और उस नफ्स को

النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ

क़त्ल मत करो जिस को अल्लाह ने मुहतरम बनाया है, मगर हक़ की वजह से। इस की अल्लाह तुम्हें ताकीद

بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ

करता है ताके तुम अक़लमन्द बनो। और यतीम के माल के क़रीब भी मत जाओ

اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَ اَوْفُوا

मगर उस तरीके से जो बेहतर हो यहां तक के वो अपनी जवानी को पहोंच जाए। और नाप

الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا

और तोल को इन्साफ के साथ पूरा पूरा दो। हम किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाते

اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ

मगर उस की वुस्अत के मुताबिक़। और जब बात करो तो इन्साफ की बात करो अगर्चे रिश्तेदार क्यूं न हों।

وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ

और अल्लाह के अहद को पूरा करो। इस की अल्लाह तुम्हें ताकीद करता है ताके तुम

تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٢﴾ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا

नसीहत हासिल करो। और यक़ीनन ये मेरा रास्ता सीधा है

فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ

तो उस पर चलो। और अलग अलग रास्तों पर मत चलो, वरना वो तुम्हें अल्लाह के रास्ते से अलग कर

عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٣﴾

देंगे। इस की अल्लाह तुम्हें ताकीद करता है ताके तुम मुत्तक़ी बनो।

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ

फिर हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को मुकम्मल किताब दी ऐसे लोगों के लिए जो नेक हैं

وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ

और हर चीज़ की तफसील और हिदायत और रहमत ताके वो अपने रब से मिलने

رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٤﴾ وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ ع ١٩

पर ईमान लाएं। और ये किताब है बरकत वाली जिस को हम ने उतारा,

فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلُوْٓا

तो उस के मुताबिक़ चलो और डरो ताके तुम पर रहम किया जाए। (इस वजह से उतारी) के कहीं तुम कहो

اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪

के किताब हम से पेहले की दो जमाअतों पर उतारी गई।

وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلُوْا
और हम उन एहले किताब की किराअत (ज़बान और इल्म) से यक़ीनन बेखबर थे। या कहीं तुम ये कहो के
لَوْ اَنَّاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّاۤ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ
अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उन से ज़्यादा हिदायतयाफता होते।
فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ
फिर यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन किताब आ गई और हिदायत और रहमत आ गई।
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ
फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उस से ऐराज़
عَنْهَا ؕ سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا
करे। अनक़रीब हम उन को जो हमारी आयतों से ऐराज़ करते हैं
سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ
बदतरीन अज़ाब की सज़ा देंगे, इस वजह से के वो ऐराज़ करते हैं। वो मुन्तज़िर नहीं हैं
اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِىَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِىَ
मगर इस के के उन के पास फरिश्ते आ जाएं या तुम्हारा रब आ जाए या तेरे
بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِىْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ
रब की बाज़ अलामात आ जाएं। जिस दिन तेरे रब की बाज़ अलामात आ जाएंगी
لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ
तो किसी शख्स को उस का ईमान लाना नफा नहीं देगा जो उस से पेहले ईमान न लाया हो
اَوْ كَسَبَتْ فِىْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا
या जिस ने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो। आप फरमा दीजिए के तुम मुन्तज़िर रहो,
اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا
यक़ीनन हम भी मुन्तज़िर हैं। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया और वो
شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِىْ شَىْءٍ ؕ اِنَّمَاۤ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ
अलग अलग गिरोह बन गए आप उन में से किसी चीज़ में नहीं हो। उन का मुआमला तो सिर्फ अल्लाह के सुपुर्द है,
ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ
फिर वो उन्हें खबर देगा उन कामों की जो वो करते थे। जो भलाई ले कर आएगा

فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ

तो उस के लिए उस के जैसी दस भलाइयाँ होंगी। और जो बुराई ले कर आएगा

فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ قُلْ اِنَّنِىْ

तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उसी जैसी एक बुराई की और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। आप फरमा दीजिए यक़ीनन मुझे

هَدٰىنِىْ رَبِّىْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا

मेरे रब ने सीधे रास्ते की हिदायत दी है। सीधे दीन की,

مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦١﴾

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत की, जो सब से कट कर एक अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे।

قُلْ اِنَّ صَلَاتِىْ وَ نُسُكِىْ وَ مَحْيَاىَ وَ مَمَاتِىْ لِلّٰهِ

आप फरमा दीजिए के यक़ीनन मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मरना अल्लाह रब्बुल आलमीन

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ

के लिए है। जिस का कोई शरीक नहीं। और उसी का मुझे हुक्म दिया गया है

وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِىْ رَبًّا

और मैं सब से पेहला इस्लाम लाने वाला हूँ। आप फरमा दीजिए क्या अल्लाह के अलावा मैं किसी को रब के तौर पर तलाश

وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ

करूं हालांके वो हर चीज़ का रब है? और कोई गुनाह नहीं करता

اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ

मगर वो उसी की जान पर वबाल होगा। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर

اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾

तुम्हारे रब की तरफ तुम्हें वापस जाना है, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन चीज़ों की जिन में तुम इखतिलाफ करते थे।

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ

और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें जानशीन बनाया ज़मीन में और जिस ने तुम में से एक को दूसरे पर

فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِىْ مَآ اٰتٰىكُمْ ؕ

दरजात के ऐतेबार से बुलन्द किया ताके वो तुम्हें आज़माए उस में जो उस ने तुम्हें दिया।

اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾

यक़ीनन तेरा रब जल्द हिसाब लेने वाला है। और यक़ीनन वो बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

اٰيَاتُهَا ۲۰٦ (٧) سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ (۳۹) رُكُوْعَاتُهَا ۲۴

उस में २०६ आयतें हैं सूरह आराफ मक्का में नाज़िल हुई और २४ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓصٓ ۚ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِىْ صَدْرِكَ

अलिफ लाम मीम सॉद। ये किताब है जो आप की तरफ उतारी गई है, इस लिए आप के सीने में इस की तरफ

حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

से कोई तंगी न रहे ताके आप उस के ज़रिए डराएं और ये ईमान वालों के लिए नसीहत है।

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا

तुम उस की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी तरफ उतारा गया है और तुम अल्लाह को छोड़ कर दोस्तों

مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ

के पीछे मत चलो। बहोत कम तुम नसीहत हासिल करते हो। और कितनी बस्तियाँ

مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾

हैं जिन को हम ने हलाक किया इस तरह के हमारा अज़ाब उन पर आया रात के वक़्त या जब वो क़ैलूला कर रहे थे।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا

फिर उन की पुकार नहीं थी जब के हमारा अज़ाब उन पर आया मगर ये के उन्हों ने कहा के

اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ فَلَنَسْئَلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ

यक़ीनन हम ही क़ुसूरवार हैं। फिर हम ज़रूर सवाल करेंगे उन से जिन की तरफ पैग़म्बरों को भेजा गया

وَلَنَسْئَلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ

और पैग़म्बरों से भी ज़रूर हम सवाल करेंगे। फिर हम उन के सामने अपने इल्म से क़िस्से बयान करेंगे

وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ

और हम ग़ाइब नहीं थे। और वज़न उस दिन हक़ है। फिर जिस के पलड़े भारी

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ

रहेंगे तो यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जिस के पलड़े हलके

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا

रहेंगे तो यही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला इस वजह से के वो

بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝٩ وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ

हमारी आयतों के साथ ज़ुल्म करते थे। यक़ीनन हम ने तुम्हें बसाया ज़मीन में

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝١٠ ع ٨

और हम ने तुम्हारे लिए ज़मीन में ज़िन्दगी के अस्बाब बनाए। बहोत कम तुम शुक्र अदा करते हो।

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ

और यक़ीनन हम ने तुम्हें पैदा किया, फिर हम ने तुम्हारी सूरतें बनाईं, फिर हम ने फरिश्तों से कहा

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ

के आदम को सजदा करो। सिवाए इबलीस के सब ने सजदा किया। के वो सजदा करने वालों

مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۝١١ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ

में से नहीं रहा। अल्लाह ने फरमाया तुझे क्या मानेअ हुवा इस से के तू सजदा नहीं करता जब के मैं ने तुझे हुक्म दिया?

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ

इबलीस ने कहा के मैं आदम से बेहतर हूँ। इस लिए के आप ने मुझे आग से पैदा किया और आप ने उसे

مِنْ طِيْنٍ ۝١٢ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ

मिट्टी से पैदा किया। अल्लाह ने फरमाया के फिर तू जन्नत से नीचे उतर जा, फिर तेरी ये ताक़त नहीं है

اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝١٣ قَالَ

के तू जन्नत में तकब्बुर करे, तो तू निकल जा! यक़ीनन तू ज़लील लोगों में से है। इबलीस ने कहा के

اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝١٤ قَالَ اِنَّكَ

आप मुझे मोहलत दीजिए उस दिन तक जिस दिन मुर्दे कबरों से उठाए जाएंगे। अल्लाह ने फरमाया के

مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝١٥ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ

यक़ीनन तुझे मोहलत दी गई। इबलीस ने कहा के फिर इस वजह से के तू ने मुझे गुमराह किया है, मैं उन के लिए

صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝١٦ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ

तेरे सीधे रास्ते पर बैठ जाऊँगा। फिर मैं उन के पास आऊँगा उन के

اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ

आगे से और उन के पीछे से और उन के दाएं से

وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝١٧ قَالَ

और उन के बाएं से। और तू उन में से अक्सर को शुक्रगुज़ार नहीं पाएगा। अल्लाह ने फरमाया

اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ
के ज़लील और मरदूद हो कर तू जन्नत से निकल जा। अलबत्ता उन में से जो तेरे पीछे चलेगा

مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝١٨ وَيٰۤاٰدَمُ
तो मैं तुम तमाम से जहन्नम को भर दूँगा। और (अल्लाह ने फरमाया के) ऐ आदम!

اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا
तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, फिर तुम दोनों खाओ जहां से तुम चाहो

وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٩
लेकिन इस दरख्त के क़रीब मत जाना, वरना तुम कुसूरवारों में से बन जाओगे।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا
फिर शैतान ने उन के लिए वसवसा डाला ताके उन के लिए खोल दे उन के छुपे

مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَ قَالَ مَا نَهٰكُمَا رَبُّكُمَا
हुए सतर को और इबलीस ने कहा के तुम्हारे रब ने तुम्हें इस

عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا
दरख्त से नहीं रोका मगर इस लिए के तुम दोनों फरिश्ते बन जाओगे या हमेशा रेहने वालों

مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝٢٠ وَ قَاسَمَهُمَاۤ اِنِّيْ لَكُمَا
में से बन जाओगे। और इबलीस ने उन दोनों के सामने क़स्में खाईं के यक़ीनन मैं तुम दोनों के लिए

لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝٢١ۙ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ
खैरख्वाही करने वालों में से हूँ। चुनांचे इबलीस ने उन दोनों को धोका दे कर नीचे गिरा दिया के जब दोनों ने दरख्त को

بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا
चखा तो उन के लिए उन के सतर खुल गए और वो दोनों अपने ऊपर जन्नत के

مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَ نَادٰىهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا
पत्ते चिपकाने लगे। और उन के रब ने उन दोनों को पुकारा, क्या मैं ने तुम्हें मना नहीं किया था

عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ
इस दरख्त से और मैं ने तुम से नहीं कहा था के शैतान तुम्हारा खुला

مُّبِيْنٌ ۝٢٢ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ
दुश्मन है? आदम और हव्वा (अलैहिमस्सलाम) केहने लगे ऐ हमारे रब! हम ने अपनी जानों पर जुल्म किया। और अगर

تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ

आप हमारी मग़फिरत नहीं करोगे और हम पर रहम नहीं करोगे तो हम नुक़सान उठाने वालों में से बन जाएंगे। अल्लाह ने

اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ

फरमाया के तुम सब नीचे उतर जाओ, तुम में से एक दूसरे के दुश्मन बन कर रहोगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में

مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ

आरज़ी ठिकाना है और एक वक़्त तक फाइदा उठाना है। अल्लाह ने फरमाया के ज़मीन में तुम ज़िन्दगी गुज़ारोगे

وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَ مِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ ع يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ ركوع ٩

और उसी में मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। ऐ इन्सानो!

قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۭ

यक़ीनन हम ने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे जिस्म के उन हिस्सों को छुपा सके जिन का खोलना बुरा है और जो खुशनुमाई का ज़रिया भी है।

وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۭ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ

और तक़्वे का लिबास ही बेहतर है। ये अल्लाह की आयात में से है

لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ

ताके वो नसीहत हासिल करें। ऐ इन्सानो! तुम्हें शैतान फितने में न डाले

كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا

जैसा के तुम्हारे वालिदैन को जन्नत से निकाला के उन से उन के लिबास उतरवा रहा था

لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَ قَبِيْلُهٗ

ताके उन को उन के सतर दिखाए। इस लिए के इबलीस और उस की जमाअत तुम्हें देखती है

مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ

ऐसी जगह से के तुम उन को नहीं देख पाते। यक़ीनन हम ने शयातीन को उन लोगों का दोस्त बनाया है

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا

जो ईमान नहीं लाते। और जब वो बेहयाई का काम करते हैं तो केहते हैं

وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۭ قُلْ

के हम ने इस पर हमारे बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया। आप फरमा दीजिए

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۭ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

यक़ीनन अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देते। क्या तुम अल्लाह पर वो बात केहते हो

مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ اَمَرَ رَبِّیْ بِالْقِسْطِ ۣ وَاَقِیْمُوْا

जो तुम जानते नहीं हो? आप फरमा दीजिए के मेरे रब ने इन्साफ का हुक्म दिया है। और ये के तुम अपने रूख

وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِیْنَ

सीधे रखो हर सजदे के वक्त और तुम उस को पुकारो उसी के लिए इबादत को खालिस

لَهُ الدِّیْنَ ۬ؕ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾ؕ فَرِیْقًا هَدٰی

करते हुए। जैसा के उस ने तुम्हें पेहली मर्तबा पैदा किया, तुम दोबारा लौट कर आओगे। एक जमाअत को

وَ فَرِیْقًا حَقَّ عَلَیْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا

अल्लाह ने हिदायत दी और एक जमाअत पर गुमराही साबित हो गई। यक़ीनन उन लोगों ने शयातीन को

الشَّیٰطِیْنَ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ یَحْسَبُوْنَ

दोस्त बनाया अल्लाह को छोड़ कर के और वो समझते रहे के

اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ خُذُوْا زِیْنَتَكُمْ

वो हिदायतयाफता हैं। ऐ इन्सानो! तुम अपनी ज़ीनत ले लिया करो

عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ

हर नमाज़ के वक्त और तुम खाओ और पियो और हद से तजावुज़ मत करो। यक़ीनन अल्लाह

ع ١٠ ٣ لَا یُحِبُّ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿٣١﴾ؒ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِیْنَةَ اللّٰهِ الَّتِیْۤ

हद से तजावुज़ करने वालों से महब्बत नहीं करते। आप फरमा दीजिए के अल्लाह की ज़ीनत को जो उस ने अपने

اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّیِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِیَ

बन्दों के लिए निकाली है और खाने की उम्दा चीज़ों को किस ने हराम किया? आप फरमा दीजिए ये नेअमतें

لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا خَالِصَةً یَّوْمَ

ईमान वालों के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में हैं, क़यामत के दिन खालिस उन्ही के लिए

الْقِیٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾

होंगी। इसी तरह हम आयतों को तफसील से बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो इल्म रखती हो।

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّیَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا

आप फरमा दीजिए के मेरे रब ने बेहयाई की चीज़ों को हराम किया है, उन में से ज़ाहिरी को भी

وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْیَ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا

और बातिनी को भी और उस ने हराम किया गुनाह और नाहक़ ज़ुल्म को। और हराम किया ये के तुम अल्लाह के साथ

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا
शरीक ठेहराओ ऐसी चीज़ जिस पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और ये के तुम अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٣٣ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ
कहो वो जो तुम जानते नहीं हो। और हर उम्मत के लिए एक आखिरी वक्त मुक़र्रर किया हुवा है। फिर जब उस का

اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝٣٤
आखिरी मुक़र्रर किया हुवा वक़्त आ जाता है तो एक घड़ी न वो पीछे हट सकते हैं और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ
ऐ इन्सानो! अगर तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर आएं जो तुम पर मेरी आयतें

عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
तिलावत करें, फिर जो तक़वा इखतियार करेगा और इस्लाह करेगा तो न उन पर खौफ होगा

وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٣٥ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
और न वो ग़मगीन होंगे। और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया

وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
और उन से तकब्बुर किया वो दोज़खी हैं। वो उस में

خٰلِدُوْنَ ۝٣٦ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
हमेशा रहेंगे। फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ

كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ
गढ़े या अल्लाह की आयतों को झुठलाए। उन को उन का हिस्सा लिखे हुए में से

مِّنَ الْكِتٰبِ ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ
पहोंच कर रहेगा। यहां तक के जब उन के पास हमारे भेजे हुए फरिश्ते आएंगे जो उन की जान निकाल रहे होंगे,

قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا
तो वो पूछेंगे कहाँ हैं वो शुरका जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा पुकारते थे? वो कहेंगे

ضَلُّوْا عَنَّا وَ شَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا
के वो हम से खो गए और वो गवाही देंगे अपनी जानों के खिलाफ ये के वो

كٰفِرِيْنَ ۝٣٧ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ
काफिर थे। अल्लाह फरमाएंगे के तुम दाखिल हो उन उम्मतों में जो तुम से पेहले

قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ

जिन्नात और इन्सानों की गुज़र चुकी हैं, (उन में शामिल हो कर) जहन्नम में दाखिल हो जाओ। जब कभी कोई जमाअत

أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا

जहन्नम में दाखिल होगी तो वो अपनी साथ वाली जमाअत पर लानत करेगी। यहां तक के जब वो जहन्नम में इकट्ठे हो जाएंगे

قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا

तो उन में से पीछे आने वाली जमाअत उन में से पेहली वाली जमाअत से कहेगी ऐ हमारे रब! ये वो लोग हैं

فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ

जिन्हों ने हमें गुमराह किया, इस लिए आप उन्हें आग का दुगना अज़ाब दीजिए। अल्लाह फरमाएंगे हर एक के लिए

ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾ وَقَالَتْ أُولَاهُمْ

दुगना है, लेकिन तुम जानते नहीं हो। और उन में से पेहली जमाअत कहेगी

لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ

उन में से पीछे आने वाली जमाअत से के फिर तुम्हारे लिए हम पर कोई फज़ीलत नहीं है,

ع ٤ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾

इस लिए तुम भी अज़ाब चखो उन्ही आमाल की वजह से जो तुम खुद करते थे।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ

यकीनन वो लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से तकब्बुर किया उन के लिए आसमान के दरवाज़े

لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ

खोले नहीं जाएंगे और वो जन्नत में दाखिल नहीं होंगे

حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي

यहां तक के ऊंट सुई के नाके (सुराख) में दाखिल हो जाए, और इसी तरह हम मुजरिमों को

الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾ لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ

सज़ा देंगे। उन के लिए जहन्नम ही से बिछौना होगा और उन के ऊपर से

غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا

ओढ़ना भी होगा। और इसी तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देंगे। और वो लोग जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا

और नेक काम करते रहे, हम किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाते मगर उस की ताक़त के मुताबिक़।

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٤٢﴾

यही लोग जन्नती हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे।

وَ نَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ

और हम निकाल देंगे वो कीना जो उन के सीनों में है, उन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا

नेहरें बेहती होंगी। और वो कहेंगे के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस की हिदायत

لِهٰذَا ۙ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ

दी। और हम ऐसे नहीं थे के हम हिदायत पाते अगर अल्लाह हमें हिदायत न देता।

لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ وَنُوْدُوْٓا

यक़ीनन हमारे रब के भेजे हुए पैग़म्बर हक़ ले कर आए। और उन को आवाज़ दी जाएगी

اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ الثلثة

के ये वो जन्नत है जिस का तुम्हें वारिस बनाया गया है उन आमाल की बदौलत जो तुम करते थे।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ

और जन्नती दोज़खियों को पुकारेंगे के यक़ीनन

وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ

हम ने तो हक़ पाया वो वादा जो हमारे रब ने हम से किया था, फिर क्या तुम ने उस वादे को हक़ पाया

مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۭ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ

जो तुम्हारे रब ने तुम से किया था? तो वो कहेंगे, जी हाँ। फिर एक ऐलान करने वाला उन के

بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ۙ الَّذِيْنَ

दरमियान ऐलान करेगा के अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर। जो

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ يَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ

अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उस में कजी तलाश करते थे।

وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَ بَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وقف لازم باختلاف

और वो आखिरत के भी मुन्किर थे। उन दोनों के दरमियान (आराफ की) दीवार होगी।

وَ عَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰىهُمْ ۚ

और आराफ पर कुछ लोग होंगे जो सब को उन की अलामात से पेहचानते होंगे।

وَ نَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ قف

और वो जन्नतियों को पुकारेंगे के ‘‘अस्सलामु अलैकुम’’।

لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ

अब तक वो जन्नत में दाखिल नहीं हुए होंगे, बल्के वो उस का लालच रखते होंगे। और जब उन की निगाहें

تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا

दोज़खियों की तरफ फेरी जाएंगी, तो वो कहेंगे के ऐ हमारे रब! तू हमें ज़ालिमों

الربع مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ ع وَ نَادٰۤى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا

के साथ मत करना। और आराफ वाले पुकारेंगे उन (चन्द) लोगों को

يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ

जिन को वो उन की अलामात से पेहचानते होंगे, वो कहेंगे के तुम्हारे कुछ काम नहीं आया

جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ اَهٰۤؤُلَآءِ

तुम्हारा जमा किया हुवा माल और वो जो तुम बड़ा बनना चाहते थे। के क्या ये वही लोग हैं

الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ؕ اُدْخُلُوا

के तुम कस्में खाया करते थे के अल्लाह उन को रहमत नहीं पहोंचाएगा? तुम जन्नत में

الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾

दाखिल हो जाओ, तुम पर खौफ नहीं है और न तुम ग़मगीन होगे।

وَ نَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا

और दोज़खी जन्नतियों को पुकारेंगे के तुम हमारे ऊपर

عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْۤا

पानी में से कुछ बहाओ या उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दिया है। तो वो कहेंगे के

اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

यक़ीनन अल्लाह ने उन दोनों को काफिरों पर हराम किया है। उन पर जिन्हों ने अपने

دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ

दीन को दिल बेहलाने का ज़रिया और खेल बना लिया और उन को दुन्यवी ज़िन्दगी ने धोके में डाले रखा।

فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا

फिर आज हम उन्हें भुला देंगे जैसा के उन्हों ने भुलाए रखा था उन के इस दिन के मिलने को। और इस

كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝٥١ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ
वजह से के वो हमारी आयतों का इन्कार करते थे। यक़ीनन हम उन के पास किताब लाए हैं

فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥٢
जिस को हम ने इल्म के साथ तफसील से बयान किया है हिदायत और रहमत के तौर पर ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाए।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ
वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर उस के नतीजे के। जिस दिन उस का नतीजा आ जाएगा

يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ
तो कहेंगे वो लोग जिन्हों ने उस को भुला रखा था इस से पेहले के यक़ीनन हमारे रब के भेजे हुए पैग़म्बर

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا
हक़ ले कर आए थे। फिर क्या हमारे लिए कोई सिफारिशी है जो हमारे लिए सिफारिश

لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ
करे या हम (दुन्या में) वापस लौटाए जाएं के हम (जा कर) अमल करें उस के अलावा जो हम अमल करते थे? यक़ीनन

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٥٣ ع
उन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला और उन से खो गए वो जो वो झूठ गढ़ा करते थे।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
यक़ीनन तुम्हारा रब वो अल्लाह है जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा किए

فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۣ يُغْشِي
छे दिन में, फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा। वो रात को

الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
ढांपता है दिन पर, दिन रात की तलाश में तेज़ी से दौड़ता है और सूरज और चाँद

وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ
और सितारों को अपने हुक्म से काम में लगा रखा है। सुनो! उसी के लिए (आलमे) खल्क़ है और उसी के लिए (आलमे) अम्र है।

تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٥٤ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ
अल्लाह बाबरकत है, तमाम जहानों का रब है। तुम अपने रब को पुकारो

تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝٥٥
आजिज़ी से और चुपके चुपके। यक़ीनन अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों से महब्बत नहीं करते।

وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا

और ज़मीन में फसाद मत फैलाओ उस की इस्लाह के बाद और उसी को खौफ से और लालच

وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

से पुकारो। यक़ीनन अल्लाह की रहमत एहसान वालों से क़रीब है।

وَهُوَ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَىْ

और वही अल्लाह है जो हवाओं को बशारत के तौर पर अपनी रहमत से पेहले

رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ

भेजता है। यहां तक के जब ये हवाएं भारी बादलों को उठा कर लाती हैं तो हम उस को

لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ

मुर्दा ज़मीन की तरफ हांक देते हैं, फिर हम उस से पानी उतारते हैं, फिर हम उस से तमाम

مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ

फलों को निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को भी (कबरों से) निकालेंगे, शायद के तुम नसीहत

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ

हासिल करो। और अच्छी ज़मीन, उस का सब्ज़ा उस के रब के

بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِىْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ

हुक्म से निकलता है। और वो ज़मीन जो बुरी है, उस का सब्ज़ा नहीं निकलता मगर निकम्मा।

٧ ع ١٤ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿٥٨﴾

इसी तरह हम आयतों को फेर फेर कर बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो शुक्र अदा करती है।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ

यक़ीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा उन की क़ौम की तरफ, फिर उन्हों ने कहा ऐ मेरी कौम!

اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّىْٓ

अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं। यक़ीनन मैं

اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥٩﴾ قَالَ

तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। उन की क़ौम

الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦٠﴾

के सरदारों ने कहा के यक़ीनन हम आप को खुली गुमराही में देख रहे हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ

नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी कौम! मुझ में गुमराही नहीं लेकिन मैं रब्बुल आलमीन की

مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ

तरफ से भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ। मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहोंचाता हूँ

وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

और मैं तुम्हारी खैरख्वाही करता हूँ और मैं अल्लाह की तरफ से जानता हूँ वो जो तुम नहीं जानते।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ

क्या तुम्हें तअज्जुब हुवा इस बात से के तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई

عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَ لَعَلَّكُمْ

तुम में से एक शख्स पर ताके वो तुम्हें डराए और ताके तुम मुत्तक़ी बनो और ताके तुम पर रहम

تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ الَّذِيْنَ

किया जाए? फिर उन्हों ने नूह (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया, फिर हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को नजात दी और उन

مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَ اَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

लोगों को जो आप के साथ कश्ती में थे। और हम ने ग़र्क़ किया उन लोगों को जिन्हों ने

بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ ٨ ع ١٥

हमारी आयतों को झुठलाया। यक़ीनन वो अन्धी क़ौम थी।

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ

और क़ौमे आद की तरफ भेजा उन के भाई हूद (अलैहिस्सलाम) को। हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ

इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई माबूद नहीं। क्या फिर तुम डरते नहीं हो? उन की

الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ

क़ौम के काफिर सरदारों ने कहा के यक़ीनन हम आप को हिमाक़त में देख

فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ قَالَ

रहे हैं और यक़ीनन हम आप को झूठों में से गुमान करते हैं। हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ

ऐ मेरी क़ौम! मुझ में हिमाक़त नहीं, लेकिन मैं रब्बुल आलमीन की तरफ से भेजा हुवा

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶۷﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا

पैग़म्बर हूँ। मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहोंचाता हूँ और मैं

لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿۶۸﴾ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ

तुम्हारे लिए अमानतदार खैरख्वाह हूँ। क्या तुम्हें तअज्जुब हुवा इस बात से के तुम्हारे पास

ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ

तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई तुम में से एक शख्स पर ताके वो तुम्हें डराए?

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ

और याद करो जब के अल्लाह ने तुम्हें जानशीन बनाया क़ौमे नूह के

نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِى الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا

बाद और तुम्हारे डील डोल के फैलाव को ज़्यादा किया। फिर अल्लाह की नेअमतों

اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۶۹﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا

को याद करो ताके तुम फलाह पाओ। उन्हों ने कहा क्या आप हमारे पास आए हो

لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ

ताके हम यकता अल्लाह की इबादत करें और हम छोड़ दें उन माबूदों को जिन की हमारे बाप दादा इबादत

اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ

करते थे? तो फिर हमारे पास आप उस अज़ाब को ले आइए जिस से आप हमें डरा रहे हो अगर आप

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ

सच्चों में से हो। हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से

رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ

अज़ाब और गज़ब नाज़िल हो चुका। क्या तुम मुझ से झगड़ते हो चन्द नामों के बारे में

سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ

जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख रखे हैं, जिस पर अल्लाह ने कोई

بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ

दलील नहीं उतारी? और इन्तिज़ार करो, यक़ीनन मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۷۱﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ

करने वालों में से हूँ। फिर हम ने हूद (अलैहिस्सलाम) को नजात दी और उन लोगों को जो आप के

مِّنَّا وَ قَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

साथ थे हमारी रहमत से और हम ने उन की जड़ काट दी जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया

وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ

और वो ईमान वाले नहीं थे। और क़ौमे समूद की तरफ भेजा उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) को।

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! इबादत करो अल्लाह की, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं है।

قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ

यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन मोअजिज़ा आ चुका है। ये अल्लाह की ऊँटनी

لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ

तुम्हारे लिए मोअजिज़े के तौर पर है, तो उस को छोड़ दो के वो अल्लाह की ज़मीन में खाए

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

और उस को बुराई के साथ मत छुओ, वरना तुम्हें दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ

और याद करो जब के अल्लाह ने तुम्हें जानशीन बनाया क़ौमे आद के बाद

وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا

और तुम्हें ठिकाना दिया ज़मीन में, तुम उस के हमवार मैदानों में

قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا

महल बनाते हो और तुम पहाड़ों को तराश कर मकानात बनाते हो। तो अल्लाह

اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾

की नेअमतों को याद करो और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ

उन सरदारों ने जिन्हों ने तकब्बुर किया आप की क़ौम में से उन लोगों से कहा जो

اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ

कमज़ोर किए गए थे, उन लोगों से जो उन लोगों में से ईमान लाए थे के क्या तुम ये अक़ीदा रखते हो के

اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ

सालेह अपने रब की तरफ से भेजे हुए पैग़म्बर हैं? उन मोमिनीन ने कहा के यक़ीनन हम तो उस पर भी ईमान

بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا بِالَّذِيْۤ

रखते हैं जिस को दे कर सालेह (अलैहिस्सलाम) भेजे गए हैं। उन लोगों ने कहा जिन्हों ने बड़ा बनना चाहा यक़ीनन

اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا

हम तो कुफ्र करते हैं उस के साथ जिस पर तुम ईमान रखते हो। फिर उन्हों ने ऊँटनी के पैर काट दिए और उन्हों ने

عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ

सरकशी की अपने रब के हुक्म से और उन्हों ने कहा के ऐ सालेह! हमारे पास वो अज़ाब ले आइए जिस से तुम हमें डराते हो

اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

अगर तुम भेजे हुए पैग़म्बरों में से हो। फिर उन को ज़लज़ले ने पकड़ लिया,

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ

फिर वो अपने घरों में औंधे पड़े रेह गए। फिर सालेह (अलैहिस्सलाम) ने उन से मुंह फेर लिया

وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ

और फरमाया ऐ मेरी क़ौम! यक़ीनन मैं ने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहोंचाया और मैं ने तुम्हारी

لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَلُوْطًا

खैरख्वाही की, लेकिन तुम खैरख्वाही करने वालों से महब्बत नहीं रखते थे। और लूत (अलैहिस्सलाम) को भेजा

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ

जब के उन्हों ने अपनी क़ौम से फरमाया क्या तुम बेहयाई करते हो, ऐसी बेहयाई जो

بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ

तमाम जहान वालों में से किसी ने तुम से पेहले नहीं की? के मर्दों के पास आते हो

الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ

शहवत के मारे औरतों को छोड़ कर के। बल्के तुम ऐसी क़ौम हो जो

مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا

हद से तजावुज़ करती हो। और उन की क़ौम का जवाब नहीं था मगर ये के उन्हों ने कहा के

اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾

उन को निकाल दो अपनी बस्ती से। इस लिए के ये ऐसे लोग हैं जो पाकबाज़ बनना चाहते हैं।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾

फिर हम ने उन को और उन के घर वालों को नजात दी मगर उन की बीवी, जो हलाक होने वालों में से हो गई।

وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
और हम ने उन पर पथ्थरों की बारिश बरसाई। फिर आप देखिए के मुजरिमों का अन्जाम

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَ اِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ ١٠ ع ١٢/١٧
कैसा हुवा। और मदयन वालों की तरफ उन के भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ
ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। यक़ीनन

جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ
तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन मोअजिज़ा आ चुका, तो नाप और तोल को पूरा

وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا
पूरा दो और लोगों को उन की चीज़ें कम कर के मत दो और ज़मीन में फसाद

فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
मत फैलाओ उस की इस्लाह के बाद। ये तुम्हारे लिए बेहतर है

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ
अगर तुम मोमिन हो। और हर रास्ते पर मत

صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
बैठो के तुम डराओ और रोको अल्लाह के रास्ते से

مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ
उन लोगों को जो अल्लाह पर ईमान लाए हैं और तुम उस में कजी तलाश करते हो। और तुम याद करो जब के

كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
तुम थोड़े थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें ज़्यादा किया। और देखो के फसाद फैलाने वालों

عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ
का अन्जाम कैसा हुवा? और यक़ीनन तुम में से एक जमाअत

اٰمَنُوْا بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا
ईमान लाई उस पर जिस को दे कर मैं भेजा गया हूँ और एक जमाअत ईमान नहीं लाई,

فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾
तो तुम सब्र करो यहां तक के अल्लाह हमारे दरमियान फैसला कर दे। और वो बेहतरीन फैसला करने वाला है।